विभागीय परिचय

संवेदनहरण विभाग १९५६ में स्थापित किया गया था । यह विभाग रोगियो की देखभाल, शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अपने उच्च स्तर के लिए केवल दिल्ली में ही नहीं अपितु पूरे भारत मे विख्यात है। सभी नैदानिक विभाग हमारी विशेषता का सहारा लेते है । चिकित्सा विज्ञान के विकास के साथ तालमेल रखते हुए, संवेदनहरण सेवाय विस्तृत एवं विविध शल्य चिकित्साओ के लिए प्रदान की जा रही है । इनमे सामान्य शल्य चिकित्सा प्रसूति एवं परिवार नियोजन नेत्र चिकित्सा ,नाक , कान एवं गला , हड्डी रोग एवं मौखिक चिकित्सा सहित स्त्री रोग चिकित्सा शामिल हैं। कलावती सरन बाल चिकित्सल्य मे बल शल्य चिकित्सा एवं बल हड्डी रोग के लिए सेवाए प्रदान की जा रही है

विभाग के अंतर्गत गहन चिकित्सा इकाई मे गंभीर रूप से पिडित रोगियो का एलाज किया जाता है । दो हताहत आपरेशन थिएटर २४ x 7 परिचालित रहते है।सी टी स्कैन एवं संशोधित ई सी टी के लिए भी सेवाय दी जाती है। ७ विभाग ९ बजे से १ बजे तक सोमवार से शनिवार एक पूर्व संवेदनहरण निदानशाला चलाता है ।

उपशामक परिहरण एवं एक्यूपंक्चर सेवाय निदानशाला मे प्रदान की जाती है। पुनरुसथान सेवाय पूरे हस्पताल मे आवशकतानुसार उपलब्ध है। । विभाग विसक्रमन सेवाओ का भी प्रबंध करता है।

विभाग का प्रमुख अनुसंधान कार्य बाल शल्य चिकित्सा एवं प्रसूति संवेदनाहरण पर केंद्रित है। रोगियो की देखभाल, शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए विभाग एकीकृत दृष्टिकोण एवं मानक आदिलेखों का पालन करता है। संकाय सदस्यों द्वारा अनुसंघित लेख राष्ट्रीय एवं अंतरीष्ट्रीय वेज्ञानिक पत्रिकाओ मे प्रकाशित है। संकाय सदस्य एवं निवासी चिकित्सक आपदा चिकित्सा दल के तहत राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आपदाओ मे, राष्ट्रीय उत्सवो और अति विशिष्ट व्यक्तियों के चिकित्सा दल का भाग रहते है।

विभाग एम.डी. संवेदनहरण सनतोकोतर पाठ्यकरम का आयोजन करता है। वर्तमान मे २८ कनिष्ठ निवासि इस पाठ्यक्रम के तहत शैशिक एवं नैदानिक कौशक प्राप्ट कर रहे है। इस पाठ्यकरम का चयन अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा पर आधारित है। १९ नियमित वरिष्ठ निवासि चिकित्सक विभाग में कार्य करते है। सभी निवासी चिकित्सको को चौतरफा अनुभव एवं प्रक्षीक्षण दिया जाता है। यह विभाग न. बी. ई. द्वारा आयोजित Diploma of National Board ले ;औए मान्यता प्राप्त केंद्र है।

विभाग कनिष्ठ निवासी चिकित्सको के लिए तय दिशा - निर्देशको के तहत प्रक्रियाए एवं पाठ्यक्रम निर्धारित करता है । शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सप्ताह मे तीन दिन निर्धारित

है। जिनमे संगोष्ठी , वैज्ञानिक पत्रिका मीमासा , समस्या विमर्श आदि शामिल है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन निवासी चिकित्सको को रोगी की दशानुसार संवेदनहरण पीड़ाहरण एवं गहन चिकित्सा आधारित विषय पर पढ़ाया जाता है।